अद्वैत आश्रम की 125वीं वर्षगाँठ

चर्चा में क्यों?

उत्तराखंड में रामकृष्ण मठ और मिशन का केंद्र, मायावती में **अद्वैत आश्रम की 125वीं वर्षगाँठ** मनाई गई

- इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में हाल ही में मायावती में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

मुख्य बिंदु:

- आश्रम की स्थापना स्वामी विवेकानंद ने **वर्ष 1899** में की थी।
- आश्रम का उद्देश्य अनुष्ठानिक परंपराओं से मुक्त **अद्वैत दर्शन का अध्ययन, अभ्यास और प्रचार** करना है तथा इसका प्रसार करने में दूसरों को प्रशिक्षित करना भी है।
    - थोड़े ही समय में आश्रम पूर्व और पश्चिम के सर्वोत्तम विचारधाराओं का केंद्र बिंदु बन गया। इसने मूल अद्वैत सिद्धांत का प्रसार करने में मदद की।
- कोलकाता में अद्वैत आश्रम की स्थापना इसके **प्रकाशनों** और पत्रिका '**प्रबुद्ध भारत**' की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिये मायावती आश्रम के 21 वर्ष बाद की गई थी।
- अद्वैत वेदांत हिंदू धर्म का मूल है, जो मानव जाति के अस्तित्व और एकजुटता की शिक्षा देता है।
    - पिछले 125 वर्षों से अद्वैत आश्रम अपनी कोलकाता शाखा से प्रकाशित साहित्य के माध्यम से अद्वैत विचारधारा के सिद्धांतों का प्रसार कर रहा है।

अद्वैत वेदांत

- यह शुद्ध अद्वैतवाद की एक दार्शनिक स्थिति को स्पष्ट करता है, एक पुनरीक्षण विश्वदृष्टि जो यह **प्राचीन उपनिषद ग्रंथों** से संबद्ध है।
- अद्वैत वेदांतियों के अनुसार, उपनिषद् अद्वैत के एक मौलिक सिद्धांत को प्रकट करते हैं जिसे 'ब्रह्म' कहा जाता है, जो सभी वस्तुओं की वास्तविकता है।
- अद्वैतवादी **ब्रह्म को व्यक्तित्व और अनुभवजन्य बहुलता से परे** समझते हैं। वे यह स्थापित करना चाहते हैं कि **किसी व्यक्ति का मूल (आत्मन) ब्रह्म** है।
- अद्वैत वेदांत का मूल ज़ोर यह है कि **आत्मा शुद्धाद्वैत/ शुद्ध अनैच्छिक चेतना** है।
- यह बिना किसी द्वितीय, अद्वैत, अनंत अस्तित्व वाला और संख्यात्मक रूप से ब्रह्म के समान है।

स्वामी विवेकानंद

- उनका जन्म **12 जनवरी, 1863 को नरेंद्र नाथ दत्त** के रूप में हुआ था।
- वह एक **साधु और रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य** थे।
- उन्होंने **वेदांत और योग** के भारतीय दर्शन को पश्चिमी विश्व में पेश किया तथा उन्हें अंतरधार्मिक जागरूकता बढ़ाने, 19वीं सदी के अंत में हिंदू धर्म को विश्व मंच पर लाने का श्रेय दिया जाता है।
- उन्होंने **वर्ष 1987 में अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस** के नाम पर रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। संस्था ने भारत में व्यापक शैक्षणिक और परोपकारी कार्य किये।
- उन्होंने **वर्ष 1893 में शिकागो (U.S.) में आयोजित प्रथम धर्म संसद** में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/advaita-ashrama-marks-125th-anniversary